बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

भाकृअनुप
ICAR

राष्ट्रीय कृषि ज्ञान कोष द्वारा प्रायोजित परियोजना
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

उत्तरी बिहार के जनजाति एवं गरीब किसानों को पशुपालन एवं संबंधित क्षेत्रों में कम लागत की तकनीक से ग्रामीण आजिविका में संवर्धन एवं सुरक्षा

Improving rural livelihood security of tribal and resource constrained farmers of North Bihar through low cost technology of Animal Husbandry and allied sector

संचालक संस्थान :– बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

सहयोगी संस्था :– आई०सी०ए०आर० –राष्ट्रीय कृषि ज्ञान कोष (NASF),नई दिल्ली

परिचय

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। राज्य की अधिकतम जनसंख्या जिविकोपार्जन के लिए कृशि, पशुपालन एवं अन्य संबधित व्यवसाय पर आधारित है। बिहार राज्य की विड़बना है कि लगभग प्रत्येक वर्ष राज्य में बाढ़, सुखाड़, ऑधी– तुफान जैसी प्राकृतिक आपदा के कारण कृषि आधारित व्यवसाय में किसानों को भारी हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में यह आवश्यक है कि राज्य के गरीब किसानों के जिविकोपार्जन के उन्नयन के लिए कम लागत की तकनीक वाली पशुपालन एवं सम्बंधित विशय पर ज्ञानवर्धन कर उनकी आय में वृद्वी के लिए प्रयास किये जायें। प्रायः यह देखा गया है कि गरीब किसान उन्नत तकनीक वाले व्यवसाय को नहीं अपना पाते हैं जिसके लिये पैसे की कमी, असाक्षरता, जानकारी का अभाव एवं बाजार की कमी एक महत्वपूर्ण कारण है। कम लागत वाली व्यवसाय से न केवल बेरोजगार युवकों को रोजगार प्राप्त हो सकेगा, अपितु ग्रामिण महिलाओं को भी इस प्रकार के व्यवसाय से जोड़कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

प्रस्तुत परियोजना गरीब किसानों की आय में बढ़ोत्तरी के लिए एक क्रियाविधि प्रयास है। इस परियोजना के लिए उत्तरी बिहार के थारू जनजाति जो मुख्यतः नेपाल के तराई वाले क्षेत्रों में पाई जाती है, एवं संपदाविहिन किसानों का चयन किया गया है। चुँकि गरीब किसानों के पास पुंजी का अभाव होता है अतः ऐसी परिस्थिति में वे कृषि अथवा पशुपालन आधारित बड़े व्यवसाय नहीं कर सकते अतः उनकी परिस्थितियों को देखते हुए कम लागत वाली पशुपालन तकनीकों के द्वारा उनकी जिविकोपार्जन एवं आय में वृद्वी करना आवश्यक है। घर के पिछवाड़े मुर्गीपालन, बटेर पालन, बकरीपालन, सुकर पालन इत्यादि कम लागत में ही गरीब एवं बेरोजगार लोगों द्वारा आसानी से किया जा सकता है तथा आय का बेहतर श्रोत साबित हो सकता है।

परियोजना के उद्देश्य :–

क) कम लागत तकनीक की पशुपालन एवं संबंधित व्यवसाय को अपनाने के पश्चात् किसानों के व्यवहार में परिवर्तन का अध्ययन करना।

ख) विभिन्न वर्ग के किसानों में कम लागत वाली तकनीक अपनाने के फलस्वरूप पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन एवं क्षेत्र में पारा–वेट कर्मीयों का प्रोत्साहन।

ग) थारू जनजाति एवं गैर–जनजाति किसानों द्वारा पशुपालन क्षेत्र के तकनिकों को बेहतर तरीके से अपनाने के लिए प्रशिक्षण मापदंड तैयार करना तथा प्रसार सेवा को बढ़ावा देना।

घ) थारू जनजाति एवं गैर–जनजाति किसानों में विभिन्न पशुपालन तकनीकों को अपनाने में आ रही समस्याओं का अध्ययन करना एवं उनके निराकरण हेतू सामाधान का सुझाव देना।

कृ) चयनित क्षेत्रों में पशुपालन क्षेत्र में परंपरागत जानकारीयों का दस्तावेज तैयार करना एवं जनजाति एवं गरीब किसानों हेतु बाजार से संपर्क स्थापित करवाना तथा किसान हितार्थ

समूहों का निर्माण करवाना।

गतिविधीयॉ :–

उपरोक्त वर्णीत उद्देश्यों को सफल बनाने के लिए चयनीत क्षेत्रों में निम्नलिखित गतिविधीयों का आयोजन किया जा रहा है।

- कम लागत वाले तकनीकों यथा घर के पिछवाड़े मुर्गीपालन, बकरीपालन, सूकर पालन, बटेर पालन, बत्तख पालन एवं अचार बनाने की विधियों का प्रर्दशन एवं प्रत्यक्षण।
- खाद्य प्रसंसकरण द्वारा डेयरी के विभिन्न उत्पादों यथा अंण्डा, मांस उत्पाद, इत्यादि का मूल्य वर्धन कराना।
- कम लागत वाले तकनीकों पर आने वाले खर्च का मूल्यांकन करना।
- प्रशिक्षण की आवश्यकता का मूल्यांकन करना तथा तकनिकों की जागरूकता हेतु प्रशिक्षण का आयोजन।
- पशुपालन के क्षेत्र में कम खर्च पर चिकित्सीय सुविधाओं को पहुँचाने के लिए पारा–वेटस को बढ़ावा देना।
- प्रशिक्षण की उपलब्धता एवं आवश्यकता में अंतर को दूर करने के लिए प्रशिक्षण का मूल्यांकन।
- प्रत्यक्षण के पश्चात होने वाले आय का मूल्यांकन करना।
- कम लागत वाली तकनीकों का आस–पास के प्रंखडों में प्रसार करवाना।
- चयनीत क्षेत्रों में कम लागत वाले सर्वोत्तम तकनीकों की पहचान कर उसकी अनुशंसा करना।
- चयनीत क्षेत्रों में तकनिकी मेला का आयोजन करना तथा नवाचारी किसानों को सम्मानित करना।
- पशुपालन तकनीकों को अपनाने में आ रही समस्याओं का पहचान करना एवं उनके निराकरण हेतू सामाधान का सुझाव देना। क्रचयनीत क्षेत्रों में बाजार से संपर्क स्थापित करना तथा पशु उत्पादों का मूल्य वर्धन करवाना।
- चयनित क्षेत्रों में पशुपालन क्षेत्र में परंपरागत जानकारीयों का दस्तावेज तैयार करना।
- पशु उत्पादों से उचित मूल्य प्राप्त करने हेतू किसान हितार्थ समूहों से संपर्क स्थापित करना।

परियोजना से होने वाले प्रमुख लाभ

- थारू जनजाति एवं गैर जनजाति के किसानों को कम लागत वाली तकनीकों की जानकारी में वृद्वी।
- प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण द्वारा किसानों की कार्यक्षमता में वृद्वी।
- कम लागत वाली तकनीक से चयनित क्षेत्र के किसानों की आय में वृद्वी।
- बेरोजगार युवक / युवतियों को स्वरोजगार प्रदान करना।
- महिलाओं को समाज के मुख्यधारा से जोड़ना।
- चयनित क्षेत्र के परंपरागत तकनीकों का दस्तावेज तैयार करना

अन्य जानकारीयाँ

परियोजना की अवधि :– 3 वर्ष
परियोजना की कुल लागत :– 1 करोड़ 24.98 लाख रूपये
परियोजना के कार्य क्षेत्र :– बिहार राज्य के पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण एवं मुजफ्फरपुर जिला।
परियोजना में कार्यरत वैज्ञानिक :–
प्रमुख अनुसंधानकर्ता :– डॉ0 पंकज कुमार, विभागाध्यक्ष, प्रसार शिक्षा विभाग, बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना
परियोजना सहयोगी :– डॉ0 सरोज कुमार रजक, सहायक प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा विभाग, बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना
सहायक अनुसंधानकर्ता :– डॉ0 ए0 के0 झा0, विभागाध्यक्ष, दुग्ध व्यवसाय प्रबंधन विभाग, संजय गॉधी डेयरी टेक्नालॉजी संस्थान, पटना
सहयोगी संस्था के वैज्ञानिक :–
डॉ0 संजीव कुमार, प्रभारी निदेशक, आई0सी0ए0आर0– केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली

First Print: DS/7992457574

शोध निदेशालय, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना द्वारा प्रकाशित